12
विचार एवं निष्कर्ष

''एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर, और सब के मध्य में, और सब में है'' (इफिसियों 4:4-6)।

अलग-अलग गुट व लोग बपतिस्मे का अर्थ तथा उद्देश्य अपनी-अपनी समझ के अनुसार लेकर, प्रभु के रूप में यीशु के लहू की बचाने वाली सामर्थ में विश्वास के अर्थपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण कार्य के बजाय बपतिस्मे को एक खोखला संस्कार बना देते हैं।

बपतिस्मे को समझने के लिए, परमेश्वर की आज्ञाओं तथा उद्देश्यों को मानने के पांच सिद्धांतों (देखिए ''पुराने नियम में संस्कार तथा समझ'') और अभिप्राय तथा कार्य की चर्चा (देखिए ''नये नियम में संस्कार तथा समझ'') की समीक्षा करनी चाहिए। कई कार्यों में लाभ अर्जित या उत्पन्न करने की शक्ति होती है, जबकि अन्य कार्यों में अपने आप में कुछ भी करने की कोई योग्यता नहीं होती। यदि कोई यह जानता है कि वह जो कुछ कर रहा है उससे प्रतिज्ञा की हुई आशीष नहीं मिल सकती, तो उसे उस आशीष को पाने के लिए किसी दूसरे में विश्वास करना चाहिए। इसलिए, उसे यह विश्वास रखकर कि जिसने प्रतिज्ञा की है वह उस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए कार्य करेगा, उस उद्देश्य को पाने के लिए कार्य करना चाहिए।

अपने कार्यों से *प्राप्त किए गए* परिणामों और किसी दूसरे के कार्य में विश्वास के कारण *पाए गए* लाभों में अन्तर रहता है। यरीहो की दीवारें गिरना इसका एक अच्छा उदाहरण है (यहोशू 6)। वे दीवारें यहोशू तथा इस्राएल के लोगों के कार्यों के कारण नहीं गिरीं। परमेश्वर ने दीवारों को गिराने के लिए उन लोगों के उसमें विश्वास के कारण वे दीवारें गिराईं। वे जानते थे कि जो कुछ उन्हें करने की आज्ञा दी गई थी, उससे दीवारें नहीं गिर सकती थीं। इस्राएलियों ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास रखकर कार्य किया *न कि* अपने कार्यों की शक्ति में विश्वास रखकर। यदि वे परमेश्वर द्वारा उन दीवारों को गिराने में विश्वास के बिना उनका चक्र लगाते, तो सही ढंग से कार्य करने में असफलता के कारण *नहीं,* बल्कि *विश्वास की कमी* के कारण परमेश्वर ने उन दीवारों को न गिराना था। यदि वे परमेश्वर की बात को बिना समझे कार्य करते, तो उनका कार्य, कार्य करने के लिए परमेश्वर में विश्वास पर नहीं बल्कि बिना सोचे-समझे आज्ञापालन के आधार पर होता।

बपतिस्मा, कार्य के लिए परमेश्वर में विश्वास

बपतिस्मा नहाने की तरह नहीं है जिसमें किसी का विश्वास या समझ कैसी भी हो पर साबुन और पानी उसके शरीर की मैल उतार ही देते हैं। बपतिस्मे में पाप धोने की अपने आप में कोई शक्ति नहीं है अर्थात केवल यीशु का लहू ही पापों को धो सकता है। परमेश्वर का पुरस्कार मनुष्य के कार्य की शक्ति के कारण नहीं मिलता, बल्कि परमेश्वर उस *विश्वास* को पुरस्कार देता है जिसके कारण वह व्यक्ति कार्य करता है। जैसे यहोशू और इस्राएल ने यह अहसास करके विश्वास से कार्य किया, कि जो कुछ वे कर रहे हैं उससे दीवारें नहीं गिरेंगी, सो जो लोग बपतिस्मा ले रहे हैं वे विश्वास से कार्य कर रहे हैं, यह अहसास करके कि जो कुछ वे कर रहे हैं उसमें उनके पापों को धोने की शक्ति *नहीं* है।

उद्धार उनको दिया जाता है जो यीशु के लहू में विश्वास करते हैं (रोमियों 3:23-25)। जो बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए यीशु के लहू में विश्वास पर आधारित *नहीं* है वह पूरी तरह क्रूस पर उसकी मृत्यु से असम्बद्ध है और उसके लहू में विश्वास का कार्य *नहीं* है। यदि शुद्ध करने के लिए यीशु के *लहू* में *विश्वास* के बिना बपतिस्मे द्वारा किसी का उद्धार हो सकता है तो वह यीशु के लहू में विश्वास किए बिना भी उद्धार पा सकता था, यहां तक कि उसका बपतिस्मा भी परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए होगा।

सिसल मेय, जूनियर ने किसी व्यक्ति द्वारा दिए उदाहरणों को यह प्रमाणित करने के लिए बिना समझे बपतिस्मा लेने से पापों की क्षमा हो सकती है, के प्रत्युत्तर में लिखा:

> बीमार लोग यदि सही दवाई ले लें, तो दवाई उन्हें चंगा कर देगी, उन्हें चाहे पता हो या न हो कि इसका उद्देश्य उन्हें चंगा करना है। यदि उन्हें लगता है कि वे बिल्कुल ठीक हैं और अपने डॉक्टर या माता-पिता की बात मानकर दवाई ले लेते हैं, तो भी दवाई काम करेगी।[1]

एक और उदाहरण देते हुए, उसने लिखा:

> परन्तु, ये उदाहरण, कार्य तथा प्रतिज्ञा के बीच सम्बन्ध पर खराब हो जाते हैं। संक्षिप्त रूप में ... दवाई का *स्वाभाविक* सम्बन्ध चंगाई देने से है। क्योंकि उद्धार अनुग्रह से पाया जाता है, बपतिस्मा लेकर थमाया नहीं जाता, विश्वास से पाया जाता है, पानी या (बपतिस्मा लेने के) कार्य से नहीं पाया जाता, बपतिस्मे और उद्धार से उसके सम्बन्ध के बारे में जो बात समझी जाती है वह यह है कि यह पश्चात्ताप है जैसे यह कि किसी का उद्धार पाने वाला विश्वासी है कि नहीं।
>
> हमें अपने उद्धार की आवश्यकता दिखाई देती है, उस धार्मिकता के लिए जो वह उपलब्ध करवाता है उनको जो मसीह पर भरोसा रखते हैं और बपतिस्मा लेते हैं क्योंकि उसने कहा है, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।'' उद्धार बपतिस्मा लेकर ही होता है, जबकि बपतिस्मे और उद्धार का आपस में तब तक कोई सम्बन्ध नहीं है, जब तक हम मसीह में विश्वास नहीं

करते जिसने इन्हें प्रतिज्ञा के द्वारा जोड़ा है, कि हमारा उद्धार विश्वास से अनुग्रह के द्वारा ही होता है।[2]

यदि बपतिस्मे से अपने आप ही पाप मिट जाता तो बपतिस्मा लेने वाले के विश्वास या समझ के बिना ही पाप मिट जाता। केवल बपतिस्मे का कार्य पाप नहीं मिटा सकता, इसलिए किसी दूसरे में अर्थात यीशु जिसने हमारे पापों के लिए अपना लहू बहाया, में विश्वास पापों को मिटाने के लिए आवश्यक है। यदि यह सत्य न होता, तो पापों की क्षमा यीशु के लहू में विश्वास के द्वारा *न* होती, बल्कि यीशु के लहू की शुद्ध करने की शक्ति में विश्वास किए बिना परमेश्वर की आज्ञा मानने के संस्काररूपी कार्य पर आधारित होती। *ऐसे तो बपतिस्मा मनुष्य की पापपूर्ण स्थिति और यीशु के लहू की शक्ति को बिल्कुल असम्बद्ध बना देती है।*

पाप को मिटाने की शक्ति बपतिस्मे में नहीं, बल्कि यीशु के लहू में है इसलिए बपतिस्मे का लाभ केवल वही पा सकता है जो उसके लहू में विश्वास रखता है। केवल बपतिस्मा लेने से क्षमा की बात से तो यीशु के लहू में *विश्वास* के बजाय क्षमा का आधार बपतिस्मा बन जाएगा। उद्धार दिलाने वाली यीशु के लहू की शक्ति में विश्वास को छोड़ नये नियम की शिक्षा का कामों से बढ़कर कोई विरोधी नहीं है (इफिसियों 2:8; रोमियों 3:25)।

ऊपर के निष्कर्षों से कुछ दृष्टिकोण अलग हैं:

> ... लोगों को कोई आज्ञा मानने की बात कहकर प्रभु जो भी उद्देश्य पूरा करता हो, परन्तु उन्हें यह देखना चाहिए कि आज्ञा क्या दी गई है, न कि यह कि क्यों दी गई है। सच तो यह है, कि वे उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकते। ''पापों की क्षमा'' (प्रेरितों 2:38), बपतिस्मे से जुड़ा एक उद्देश्य है जिसे परमेश्वर तब पूरा करता है जब लोग बपतिस्मा लेते हैं। बेशक ''पवित्र आत्मा के दान'' को एक प्रतिज्ञा के रूप में लिखा गया है, परन्तु यह क्षमा के साथ उसी श्रेणी में फिट बैठती है क्योंकि दोनों मन फिराने और बपतिस्मा लेने वालों पर परमेश्वर की ओर से आशिषें हैं। न ''पापों की क्षमा'' और न ही ''पवित्र आत्मा का दान'' बपतिस्मे की तरह आज्ञा हैं। दोनों ही परिणाम हैं जो आज्ञा मानने के बाद होते हैं। प्रभु का यह स्पष्ट कथन किसी को नहीं मिलेगा कि परमेश्वर बपतिस्मे के समय क्षमा और आत्मा का दान देता है या इनमें से एक का या दोनों लाभों का इन्कार करता है।[3]

कोई भी इस बात से इन्कार नहीं करता कि पाप परमेश्वर ही क्षमा करता है। परन्तु, किसी दूसरे द्वारा की गई प्रतिज्ञा को पाने के लिए उसे ग्रहण किया जा सकता है। इस्राएल को विश्वास था कि परमेश्वर यरीहो की दीवारों को गिरा देगा। सो उन्होंने की गई प्रतिज्ञा को पाने के लिए उसकी बात मानी थी।

''सौ रुपए लेने के लिए अपना हाथ निकालो!'' और ''अपना हाथ निकालो!'' कथनों में अन्तर है, दूसरे कथन के साथ कोई स्पष्ट उद्देश्य या आशीष नहीं जुड़ी है। पहले कथन में

आज्ञा को मानने के लिए *एक प्रतिज्ञा में विश्वास* और *उद्देश्य के साथ क्रिया* आवश्यक है, जबकि दूसरे कथन के लिए आंख मूंदकर आज्ञा मानने के सिवाय न तो विश्वास और न ही उद्देश्य की आवश्यकता है।

पहले, कथन के अनुसार हाथ निकालना किसी को सौ रुपए लेने के योग्य *नहीं* बनाएगा जब तक वह सौ रुपए लेने के लिए अपना हाथ बाहर नहीं निकालता। वह अपना हाथ किसी से मिलाने या किसी और कारण से भी निकाल सकता है, परन्तु इस कार्य से वह सौ रुपए लेने के योग्य नहीं हो सकता। यदि किसी को उस व्यक्ति के मन का पता चल जाए जिसने हाथ निकाला था, तो उसे पता होगा कि उसने सौ रुपए के लिए हाथ निकाला था या नहीं। अब *दूसरे* कथन पर विचार करें। कोई किसी पर सौ रुपए देने या सौ रुपए के लिए हाथ निकालने पर कैसे विश्वास कर सकता है यदि उसे यह पता ही न हो या समझ ही न हो कि क्या प्रतिज्ञा की गई थी?

पुरानी व्यवस्था में, पशुओं का बलिदान मेलबलि, पाप बलि, या दोष बलि के रूप में दिया जा सकता था (लैव्यव्यवस्था 4:27, 28)। प्रत्येक बलिदान किसी उद्देश्य के लिए लाना होता था; उदाहरण के लिए ''उस पाप के लिए जो उसने किया है'' व्यक्ति के लिए पाप बलि लाना आवश्यक था। अलग-अलग बलिदानों के लिए जानवर वही हो सकता था, परन्तु प्रत्येक बलिदान का विशेष उद्देश्य अलग-अलग होना आवश्यक था।

किसी इस्राएली द्वारा याजक के पास बकरी का बच्चा ले जाकर यह कहने की कल्पना करें कि वे उसे बलिदान करना चाहते हैं। याजक उनसे पूछेगा, ''तुम यह बलिदान क्यों ला रहे हो?''

आदमी जवाब देगा, ''क्योंकि परमेश्वर ने बलिदान की आज्ञा दी है।''

याजक उत्तर देगा, ''बलिदान तो अलग-अलग उद्देश्य के लिए दिए जाते हैं। तुम यह बलिदान किस उद्देश्य से लाए हो?''

वह जवाब देगा, ''परमेश्वर ने बलिदान देने की आज्ञा दी थी।''

''इतना ही काफी नहीं है। बलिदान देने का तुम्हारा कोई उद्देश्य तो होना ही चाहिए,'' याजक उसको बताएगा।

''मुझे तो पता नहीं कि मैं भेंट क्यों चढ़ा रहा हूं। मैं तो केवल इतना ही जानता हूं कि परमेश्वर ने बलिदान देने की आज्ञा दी थी,'' वह कह सकता है।

''क्या यह बलिदान तुम्हारे पाप के लिए है?'' याजक पूछ सकता है।

''पापों से क्षमा देना तो परमेश्वर का काम है,'' वह आपत्ति कर सकता है। ''पापों की क्षमा के लिए आज्ञा मैं नहीं मान सकता हूं। मैं तो केवल परमेश्वर की आज्ञा मानना चाहता हूं।''

''जब तक बलिदान के लिए तुम्हारा कोई उद्देश्य नहीं है तुम परमेश्वर की आज्ञा नहीं मान सकते,'' याजक उसे बता सकता है। ''परमेश्वर ने केवल बलिदान देने की आज्ञा ही नहीं दी थी। उसने तो विशेष उद्देश्यों के लिए बलिदान देने की आज्ञा दी है।''

''मेरा पाप तो क्षमा हो चुका है। बलिदान तो परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए है,''

वह कह सकता है।

याजक यह कहकर बात समाप्त कर सकता है, ''जब तक बलिदान किसी विशेष उद्देश्य के लिए न हो, मैं इसे नहीं चढ़ा सकता। मैं इसे मेल बलि, या पाप बलि, या दोष बलि के रूप में चढ़ा दूंगा, परन्तु केवल परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए मैं इसे नहीं चढ़ा सकता।''

परमेश्वर की आज्ञाकारिता के लिए केवल बलिदान से बढ़कर कुछ शामिल होगा, क्योंकि आज्ञाकारिता भी मांग करती है कि कार्य सही उद्देश्य के आधार पर हो।

आज बपतिस्मा बहुत से कारणों से दिया जाता है (उदाहरण के लिए, किसी साम्प्रदायिक कलीसिया का सदस्य बनने के लिए या यह दिखाने के लिए कि किसी का उद्धार हो चुका है)। बेशक आज्ञा मानने के लिए बपतिस्मा लेना परमेश्वर की आज्ञाकारिता का एक कारण हो सकता है, परन्तु परमेश्वर द्वारा की गई प्रतिज्ञा में विश्वास के बिना आज्ञाकारिता परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता नहीं है।

कथन 1: ''यीशु हमारा उदाहरण है''

कहा जाता है कि यीशु बपतिस्मा लेने के हमारे उद्देश्य का एक उदाहरण है अर्थात ''हम से ... यीशु की तरह बपतिस्मा लेने की अपेक्षा की जाती है।''[4] अनेक प्रकार से यीशु हमारा उदाहरण है, परन्तु पापों की क्षमा के लिए वह हमारा उदाहरण नहीं हो सकता, जिसके लिए मन फिराने की आवश्यकता है (प्रेरितों 3:19), क्योंकि उसने कोई पाप नहीं किया था जिसके लिए उसे मन फिराना पड़ता या उसे क्षमा किया जाता।

यीशु ने बपतिस्मा परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए लिया था, परन्तु उसने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा नहीं लिया था। यूहन्ना के पास बपतिस्मा लेने के लिए आने वाले लोग परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए ही आए थे। उनके आने का यह अच्छा कारण था लेकिन उनका उद्देश्य यह नहीं था। वे अपने पापों का अंगीकार करने (मत्ती 3:6) और उस क्षमा को पाने के लिए आए थे जिसका प्रचार यूहन्ना करता था (लूका 3:3)।

यीशु को इस उद्देश्य के लिए आने की आवश्यकता न होना इस तथ्य को नकार नहीं देता कि उस उद्देश्य के लिए सभी दूसरे लोगों को आने की आवश्यकता थी और हमारे आने की आवश्यकता को भी नकार नहीं देता। हमें उन लोगों के जैसा बनना है जिन्होंने महसूस किया कि हमारे हाथ गंदे हैं और हम उन्हें धोने के लिए आ रहे हैं। यीशु के पास हमारा आना और उसकी इच्छा के प्रति समर्पण करना इसलिए होना चाहिए कि हम उसके लहू से धोए जाने की खोज में हैं। इस तथ्य का कि हम अपने आपको धोकर शुद्ध नहीं कर रहे हैं, का अर्थ यह नहीं है कि हम इस धोए जाने के उद्देश्य से बपतिस्मे के द्वारा यीशु के पास नहीं आ सकते। हम उद्देश्य की आज्ञा नहीं मान सकते, परन्तु यीशु के लहू के द्वारा धोए जाने के उद्देश्य के लिए आते हैं। जब हम इस उद्देश्य के लिए हैं तो परमेश्वर हमें देखता है और विश्वास के आधार पर हमें बचाता है। किसी दूसरे उद्देश्य के लिए बपतिस्मा लेने के लिए आने वाला व्यक्ति बपतिस्मा लेकर यीशु के द्वारा उसे क्षमा करने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा में

विश्वास के साथ बात नहीं मान रहा।

उसके बाद के कथन परस्पर विरोधी लगते होंगे, परन्तु रूबल शैली ने सही अवलोकन किया है, ''महत्वपूर्ण बात व्यक्तिगत विश्वास है। कोई क्या समझता है? उसका इरादा क्या है?''[5]

यीशु ने कहा कि वह बपतिस्मा लेने के लिए सब धार्मिकता को पूरा करने के लिए आया है जिसका अर्थ है कि वह अपने बपतिस्मे के उद्देश्य से अनभिज्ञ नहीं था। यीशु का अनुसरण, हमें बपतिस्मे के उद्देश्य को समझकर ही करना चाहिए, जिसका अर्थ यह है कि हम अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मे लेने आते हैं।

कथन 2:
''आत्मा का दान तथा पापों की क्षमा एक ही श्रेणी में हैं''

कुछ लोग बपतिस्मे के उद्देश्य के रूप में शुद्ध होने की समझ की अनिवार्यता पर आपत्ति करते हैं:

> ''पवित्र आत्मा के दान'' को एक प्रतिज्ञा के रूप में तो कहा गया है, परन्तु यह क्षमा के साथ उसी श्रेणी में आती है क्योंकि दोनों ही मन फिराने और बपतिस्मा लेने वाले लोगों पर परमेश्वर की ओर से दी गई आशिषें हैं। न तो ''पापों की क्षमा'' और न ही ''पवित्र आत्मा का दान'' बपतिस्मे की तरह आज्ञा है।[6]

प्रेरितों 2:38 में यह *नहीं* लिखा है, ''मन फिराओ और ... बपतिस्मा लो *और* तुम पापों की क्षमा *और* पवित्र आत्मा का दान पाओगे,'' न ही वहां यह लिखा है, ''मन फिराओ और पापों की क्षमा *और* पवित्र आत्मा के *लिए* बपतिस्मा लो।'' वहां यह लिखा है, ''मन फिराओ, और ... अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए ... बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।'' पापों की क्षमा और पवित्र आत्मा का दान यूनानी शब्द *eis* (''के लिए'') से *समान सम्बन्ध नहीं* हैं। ''के लिए'' (*eis*) का सम्बन्ध *केवल* पापों की क्षमा से है (''पापों की क्षमा *के लिए* बपतिस्मा ले''), *न* कि पवित्र आत्मा के दान से (''पवित्र आत्मा *के लिए* बपतिस्मा ले'')। बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए है, न कि पापों की क्षमा *और* पवित्र आत्मा के दान के लिए। पवित्र आत्मा को पाने की शर्त पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लेना है।

अलग-अलग अनुवाद इस विभिन्नता को स्पष्ट करते हैं:

> Repent and be baptized ... for the forgiveness of sins. And you will receive the gift of the Holy Spirt (NIV, also Green, *A Literal Translation*).
>
> Repent, ... and be baptized ... for the forgiveness of sins, and you shall receive the gift of the Holy Spirit (NASB, RSV, NRSV).

पापों की क्षमा के बाद अन्तराल या सेमीकॉलन रखने पर, ये सभी अनुवाद संकेत देते हैं कि पवित्र आत्मा का पाना उन लोगों को आशीष है जिन्होंने मन फिराकर पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लिया है। इसलिए, बपतिस्मा पवित्र आत्मा पाने के लिए *नहीं,* बल्कि पापों की क्षमा पाने के लिए लिया जाता है, जिसके बाद पवित्र आत्मा का दान मिलता है।

नया जन्म दिलाने में भी बपतिस्मा शामिल होता है। पवित्र आत्मा का दान जन्म के बाद उन लोगों को दिया जाने वाला एक दान है जिन्होंने नये सिरे से जन्म ले लिया है (गलतियों 4:6)। बपतिस्मा नये सिरे से जन्म पाने के लिए लिया जाता है, और नये सिरे से जन्म पाने वाले को पवित्र आत्मा दिया जाता है। बपतिस्मा और पवित्र आत्मा का दान पापों की क्षमा और नए जन्म के साथ समान रूप से जुड़ा नहीं है। नया जन्म केवल एक खोखले संस्कार के कारण नहीं बल्कि बपतिस्मा लेते समय शुद्धता तथा नया जीवन पाने के सचेत प्रयास और योगदान से होता है।

कथन 3: ''बपतिस्मे के 'into' की हर बात समझना आवश्यक नहीं''

कुछ लोगों का कहना है कि बपतिस्मा नीचे लिखी बातों ''में'' या eis है जिसे अंग्रेज़ी में ''into'' कहा जाता है और हिन्दी की बाइबल में इसका अनुवाद ''से'' ''का'' और ''के लिए'' हुआ है।

(1) पिता पुत्र और पिता के नाम ... (मत्ती 28:19)।

(2) पापों की क्षमा ... (प्रेरितों 2:38; मरकुस 1:4; लूका 3:3; मत्ती 26:28)।

(3) प्रभु यीशु के नाम ... (प्रेरितों 19:5)।

(4) मसीह ... (रोमियों 6:3)।

(5) मसीह की मृत्यु ... (रोमियों 6:3)।

(6) मसीह की देह, कलीसिया ... (1 कुरिन्थियों 12:13)।

इसलिए उनका तर्क है कि यदि उनके लिए जिनमें पतरस प्रेरितों 2:38 में प्रचार कर रहा था, पापों की क्षमा को समझना आवश्यक था, तो उनके लिए बपतिस्मे की eis (''into'') की हर बात समझना आवश्यक था।[7]

इसमें समस्या यह है कि मत्ती 28:19, प्रेरितों 19:5, रोमियों 6:3 और 1 कुरिन्थियों 12:13 में उद्धृत यूनानी वाक्यांश प्रेरितों 2:38 के वाक्यांश से भिन्न हैं, जैसा कि भाषा विशेषज्ञ ओपके ने कहा है।[8]

बपतिस्मा लेने के हमारे उद्देश्यों को परमेश्वर जानता है; इसी आधार पर वह पवित्र आत्मा देता है। जैसे पुराने नियम में लोग अपने पाप से क्षमा पाने के लिए बलिदान लाते थे, उसी प्रकार हम अपने पापों से धोए जाने के उद्देश्य से बपतिस्मा लेने के लिए आते हैं। किसी और उद्देश्य के लिए बपतिस्मा लेने आने वाला उस अर्थ से चूक जाता है जो परमेश्वर ने बपतिस्मे के साथ जोड़ा है।

कथन 4: ''इब्राहीम की यात्रा एक उदाहरण है''

किसी ने कहा है कि इब्राहीम की यात्रा चित्रित करती है कि बपतिस्मा लेने के लिए इसके उद्देश्य का पता होना आवश्यक नहीं है।

> परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए, इब्राहीम अपना घर छोड़कर किसी और जगह जाने के लिए निकल पड़ा, जब उसे कुछ पता नहीं था कि वह कहां जा रहा है (इब्रानियों 11:8)। यदि उसे पता होता कि परमेश्वर उसे कहां जे ला रहा है, तो क्या वह इससे अधिक आज्ञाकारी होता?[9]

यह प्रमाणित करने के लिए कि बपतिस्मा लेने के लिए इसके उद्देश्य को जानने की आवश्यकता नहीं है, इब्राहीम की यात्रा के इस्तेमाल से दो समस्याएं पैदा होती हैं। पहली, इब्राहीम को परमेश्वर के कथन में केवल अपने घर को छोड़कर उस जगह जाना ही नहीं था जो उसने उसे दिखानी थी। परमेश्वर ने उसे बताया था कि, यदि वह ऐसा करेगा, तो वह उससे एक बड़ी जाति बनाएगा और उसके द्वारा पृथ्वी के सभी घरानों को आशीष मिलेगी (उत्पत्ति 12:1-3)। दूसरी, इब्राहीम अपने लोगों को यह जाने बिना छोड़कर चला गया कि वह कहां जा रहा था, परन्तु बिना प्रतिज्ञा के नहीं कि परमेश्वर उसे दिखाएगा कि वह कहां जाए (उत्पत्ति 12:1)।

इसके बपतिस्मे की तुलना कई बार इससे की जाती है कि एक व्यक्ति ने पापों की क्षमा के लिए जल में बपतिस्मा लेने का फैसला लिया और चल पड़ा। परन्तु यह नहीं जानता था कि वह बपतिस्मा लेने के लिए कहां जा रहा है। उद्धार के लिए आवश्यक विश्वास प्रतिज्ञा की हुई आशीष में विश्वास होना चाहिए (न कि इस बात पर कि कोई पानी ढूंढ़ने के लिए कहां जा रहा है)। यही बात इब्राहीम के विश्वास के साथ भी थी; उसका विश्वास परमेश्वर की प्रतिज्ञा की हुई आशीष में था न कि इस बात में कि वह अपनी प्रतिज्ञाओं को कहां पूरा करेगा।

इब्राहीम को यह समझ *नहीं* थी कि वह कहां जा रहा है, क्योंकि परमेश्वर ने उस पर *अभी प्रकट नहीं किया था* कि वह कहां जा रहा है, उसने केवल इतना ही प्रकट किया था कि यदि वह जाए तो वह वहां क्या करेगा। यहां उसने उसका विश्वास रख दिया। परमेश्वर ने *प्रकट कर दिया है* कि यदि हम बपतिस्मा लेते हैं तो वह क्या करेगा, जिसका अर्थ यह हुआ कि हम समझ सकते हैं कि वह क्या करेगा और इस बात में हमें अपना विश्वास रखना है।

कथन 5: ''इस्राएल को यरीहो में अपने कार्य के लिए कारण को समझने की आवश्यकता नहीं थी''

इस्राएल के यरीहो की दीवारों का चक्कर लगाने के बारे में प्रश्न पूछा गया है, ''यदि वे चक्कर लगाने के कारण को न समझ पाते परन्तु फिर भी चक्कर लगाते रहते, तो क्या परमशेवर दीवारों को खड़ी रहने देता?''[10] परमेश्वर ने उन्हें पर्याप्त, स्पष्ट और सम्पूर्ण निर्देश

देकर साफ-साफ स्पष्ट रूप से बता दिया था कि यदि वे उसकी आज्ञा को मानते हैं तो वह क्या करेगा (यहोशू 6)। वे समझ गए और इसलिए, परमेश्वर में *विश्वास* के साथ वह करने के लिए आगे बढ़े जिसकी उसने प्रतिज्ञा की थी। इस विश्वास के आधार पर, परमेश्वर ने दीवारों को गिरा दिया (इब्रानियों 11:30)।

उनका विश्वास किस में था? आगे बढ़ने में? शोर मचाने में? नरसिंगा फूंकने में? जिस विश्वास ने उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा दी वह दीवारों को गिराने के लिए परमेश्वर में उनका विश्वास था। यह तथ्य कि परमेश्वर ने *उनके विश्वास के कारण* दीवारें गिरा दीं, का अर्थ है कि यदि वे दीवारें गिराने के लिए उसमें विश्वास *न* करते तो बेशक वे आगे बढ़ भी जाते, शोर मचाते और नरसिंगे फूंकते, तो भी उसने दीवारों को नहीं गिराना था।

परमेश्वर की प्रतिज्ञा दीवारों को गिराने की थी। उनका काम आगे बढ़ना, शोर मचाना और परमेश्वर को कार्य करने देने के लिए उसमें *विश्वास* रखकर नरसिंगे फूंकना था। यदि वे परमेश्वर के योगदान को न समझते, तो वे परमेश्वर के कार्य करने में विश्वास रखकर काम नहीं कर सकते थे।

हमारे सम्बन्ध में, परमेश्वर का काम हमारे पापों की क्षमा है। हमारा काम परमेश्वर के काम में विश्वास रखकर बपतिस्मा लेना है। यदि हम परमेश्वर के काम को नहीं समझते, तो हम उसके काम में विश्वास न रखकर काम नहीं कर सकते हैं।

शैतान इतना चालाक है कि वह जानता है कि ठीक-ठीक समझ न होने से विश्वास में रुकावट पड़ने से, उद्धार में रुकावट पड़ती है। ''जो कोई राज्य का वचन सुनकर नहीं समझता, उसके मन में जो कुछ बोया गया था, उसे वह दुष्ट आकर छीन ले जाता है; यह वही है, जो मार्ग के किनारे बोया गया था'' (मत्ती 13:19), ''कि कहीं ऐसा न हो कि वे विश्वास करके उद्धार पाएं'' (लूका 8:12)। समझना विश्वास का आधार है (रोमियों 10:17), और विश्वास परमेश्वर को स्वीकार योग्य कार्य का आधार है (इब्रानियों 11:6); इसलिए, उद्धार के लिए समझ ज़रूरी है (मत्ती 13:15)। जो यह नहीं समझता कि पापों की क्षमा के लिए क्या आवश्यक है, वह पापों की क्षमा के लिए ज़रूरी बात कर ही देता होगा, परन्तु वह विश्वास से कार्य नहीं कर सकता; वह किए जाने वाले कार्य और आशीष की प्रतिज्ञा में सम्बन्ध को भी नहीं समझता। ऐसा कार्य विश्वास का नहीं बल्कि बिना समझे कार्य मानने का होता है। उद्धार केवल आज्ञाकारिता से नहीं बल्कि आज्ञाकारिता के उस कार्य से होता है जो शुद्ध करने वाले यीशु के लहू में *विश्वास* पर आधारित है।

कथन 6: ''बपतिस्मा सभी आशिषों के लिए लिया जाता है''

बपतिस्मा लेने वाले के लिए उपलब्ध बहुत सी आशिषों की सूची देने के बाद, जिम्मी ऐलन ने यह अवलोकन किया:

तर्कसंगत रूप से, यदि कोई विवाद करता है कि उसका बपतिस्मा लेते समय प्रभु

> द्वारा दी गई पापों की क्षमा की समझ न रखने वाले को फिर से डुबकी लेनी पड़ेगी, इसका अर्थ यह हुआ कि यदि उसे परमेश्वर द्वारा पूरे किए किसी और कारण की समझ नहीं होगी, तो पता चलने पर उसे एक और बपतिस्मा लेना होगा।[11]

किसी निश्चित उद्देश्य के लिए कार्य करते समय, हम दूसरी बहुत सी आशिषों के लिए द्वार खोल सकते हैं। ये आशिषें उस कार्य का *उद्देश्य* हुए बिना उसका *परिणाम* हो सकती हैं।

एक व्यक्ति शादी का लाइसेन्स खरीद लेता है, चर्च भवन के पीछे चलता हुआ कहता है, मैं शादी के उद्देश्य के लिए ''करता हूं।'' शादी करवाने के *लिए* उसकी इन बातों से शादी से जुड़ी बहुत सी आशिषें उपलब्ध हो सकती हैं। इसी प्रकार, एक पापी को परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध सुधारने के लिए अर्थात अपने पापों से क्षमा पाने के लिए बपतिस्मा लेना पड़ता है ताकि अब वह परमेश्वर से दूर न रहे। इस तरह आज्ञा मानने से उन बहुत सी आत्मिक आशिषों के लिए जो मसीह में मिलती हैं, द्वार खुल जाएगा (इफिसियों 1:3)।

बपतिस्मा लेने वाले के लिए नये सम्बन्ध से जुड़ी सभी आशिषों को समझना आवश्यक नहीं है। शादी करवाने वाले व्यक्ति की तरह, बपतिस्मा लेने वाले को केवल इतना ही जानना आवश्यक है कि उस सम्बन्ध में प्रवेश और *उस उद्देश्य के लिए* क्या करने की आवश्यकता है। ऐसा करके, बपतिस्मे की सभी आशिषें, चाहे वह उन्हें समझता हो या नहीं, उसके लिए उपलब्ध होंगी। यदि उसे हर दिन एक नई आशीष के बारे में जानना पड़े तो इसका अर्थ होगा कि जैसे उसे हर आशीष पाने के लिए फिर से विवाह करने की आवश्यकता नहीं है वैसे ही बपतिस्मा लेने की आवश्यकता भी नहीं होगी। बपतिस्मा लेने या शादी करवाने के लिए जो कुछ करने की आवश्यकता थी वह करके इस नये सम्बन्ध की सभी आशिषें पहले ही उपलब्ध हो चुकी हैं।

सिसिल मेय जूनियर ने सही अवलोकन किया है,

> प्रश्न यह नहीं कि ''पवित्र आत्मा का दान पाने'' के बजाय ''पापों की क्षमा के लिए'' को समझना आवश्यक है या नहीं। ''पाप क्षमा हो गए हैं'' के बजाय ''पापों की क्षमा के लिए'' के रूप में समझ होनी आवश्यक है; ... क्योंकि यह विश्वास करके कि उद्धार पहले ही हो चुका है बपतिस्मा लेने वाला बपतिस्मे के बाइबल से जुड़े प्रत्येक उद्देश्य को नकार देता है।[12]

कथन 7:
''बपतिस्मे के लिए एक उद्देश्य में दूसरे सब शामिल हैं''

कहा गया है कि बपतिस्मा लेने के *एक* उद्देश्य अर्थात आज्ञा मानने में दूसरे सभी उद्देश्य शामिल हैं:

> लगता है कि बपतिस्मा लेने के लिए या सभी कारणों या एक कारण जिसमें सभी दूसरे कारण सिमट जाते हों, को समझना आवश्यक है। ... मैं उस एक कारण को

मानता हूं जिसमें दूसरे सभी कारण शामिल हैं अर्थात परमेश्वर की आज्ञा मानना। यीशु ने पिता की आज्ञा मानने के लिए बपतिस्मा लिया था (मत्ती 3:15-17), और बपतिस्मा लेने के लिए उसके उद्देश्य से बड़ा किसी का उद्देश्य नहीं हो सकता।[13]

किसी को उसके द्वारा लिए जाने वाले बपतिस्मे के दूसरे उद्देश्य को नज़रअन्दाज करके और हमारे द्वारा लिए जाने वाले बपतिस्मे के उद्देश्यों का अपमान करके, यह निष्कर्ष निकालना का *कि* यह उद्देश्य ही वह *एक* उद्देश्य है जिसके लिए हम बपतिस्मा लेते हैं, क्या अधिकार है ?

क्या परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए यीशु के बपतिस्मा लेने में पापों की क्षमा, उद्धार और नया जीवन शामिल था ? यदि नहीं था, तो परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए बपतिस्मे से जुड़े सभी उद्देश्य शामिल नहीं हैं। हमारे बपतिस्मे में यीशु द्वारा लिए गए बपतिस्मे का कारण अर्थात परमेश्वर की आज्ञा मानना शामिल है। लेकिन क्रूस पर बहाए यीशु के लहू से सम्भव किए पापों की क्षमा द्वारा परमेश्वर के साथ नये सम्बन्ध में प्रवेश करने के उद्देश्य से शामिल करने से आगे बढ़ जाता। जो लोग बपतिस्मे को इससे कम बनाते हैं वे इसे यीशु के लहू के विश्वास के बगैर सोचे-समझे आज्ञा मानने के आधार पर एक खोखला संस्कार बना देते हैं। बाइबल में कहीं भी समझ के बिना, व्यर्थ समारोह, मनुष्य को परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में लाने के लिए कार्य नहीं है।

सारांश

बपतिस्मा लेने से परमेश्वर के साथ एक नए सम्बन्ध में प्रवेश किया जाता है जिससे बहुत सी आशिषों के लिए द्वार खुल जाते हैं। बपतिस्मा परमेश्वर की आज्ञा मानने से कहीं अधिक है, क्योंकि इसमें किसी के अपने पापपूर्ण अतीत की पहचान, यीशु के प्रभुत्व और पापों को क्षमा करने की शक्ति में विश्वास, यीशु के लिए जीने का निश्चय और परमेश्वर के साथ एक नये सम्बन्ध में प्रवेश की इच्छा शामिल है। जिस व्यक्ति का बपतिस्मा इस समझ और मन में इस उद्देश्य के साथ नहीं हुआ उसे समझ लेना चाहिए कि उसने नई वाचा का वह बपतिस्मा नहीं पाया और इस कारण उसे वह बपतिस्मा ले लेना चाहिए, क्योंकि यीशु में उसका विश्वास, परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को सुधारने के लिए जीवन में आवश्यक परिवर्तन, यीशु में विश्वास का उसका अंगीकार और बपतिस्मे में यीशु के साथ गाड़े जाने का निश्चय लेता है ताकि वह यीशु के लहू के द्वारा धोया जा सके और पापों की क्षमा के द्वारा परमेश्वर के साथ नये सम्बन्ध में प्रवेश कर सके।

पाद टिप्पणियां

[1]सिसिल मेय जूनी., ''द नेयर ऑफ़ फ़ेथ, एण्ड द 'रीबैप्टिज़म' क्वेश्चन,'' मेगनोलिया बाइबल कॉलेज

प्रीचर टॉक 8 (मार्च 1992): 3. [2]वहीं। [3]जिम्मी ऐलन, *रीबैप्टिज़म ?* (वेस्ट मोनरो, ला.: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1991), 41. यह काम विस्तृत प्रस्तुति तथा लेखक के साथ सहमत लोगों के बहुत उद्धरणों के कारण चुना गया है, लेखक के प्रति किसी प्रकार के विद्वेष के कारण नहीं। [4]वहीं। [5]रूबल शैली, *आई जस्ट वांट टू बी ए क्रिश्चियन* (नैशविले: 20th सेन्चुरी क्रिश्चियन, 1986), 124. [6]ऐलन, 41. [7]वहीं, 117. [8]ए. ओपके, *थियोलिजिक डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट* में ''*eis*,'' सम्पा. गार्हड किट्टल, अनु. व सम्पा. ज्योफरी ब्रोमिले। [9]ऐलन, 42. [10]वहीं, 43.

[11]वहीं, 173. [12]सिसिल मेय जूनी., ''द नेयर ऑफ़ फ़ेथ, एण्ड द 'रीबैप्टिज़म' क्वेश्चन,'' मैगनोलिया बाइबल कॉलेज *प्रीचर टॉक 8* (मार्च 1991): 3. [13]ऐलन, 173.

मसीही लोगों की उदारता से ट्रुथ फ़ॉर टुडे वर्ल्ड मिशन स्कूल बिना कोई कीमत लिए ये पुस्तकें आपको उपलब्ध करवा सका है। अपनी mailing list को अपडेट करने के लिए हमें आपसे निम्न जानकारी चाहिए।

यह पुष्टि करने के लिए कि आपकी जानकारी अभी भी सही है, कृपया हमें साल में कम से कम एक बार अवश्य लिखें कि क्या आपको यह सामग्री लगातार सही पते पर मिल रही है और आपके लिए कैसे सहायक हो रही है। आपकी सेवकाई में परमेश्वर आपको आशीष दे।

एक पर टिक करें: ☐ पुरुष ☐ स्त्री

(नोट: सम्भव हो तो पता अंग्रेज़ी के बड़े अक्षरों में लिखें)

नाम: _____

पूरा पता: _____

_____

_____ PIN _____

पुराना पता (पता बदलने की स्थिति में): _____

_____

_____

_____ PIN _____

ई-मेल पता: _____

कलीसिया का नाम: _____

स्थान: _____

प्रचारक का नाम: _____

जिस मण्डली में आप आराधना करते हैं, वहां आपकी सेवा क्या है?

☐ प्रचारक ☐ सदस्य

☐ बाइबल क्लास टीचर ☐ सदस्यता नहीं

क्या आपको ट्रुथ फ़ॉर टुडे वर्ल्ड मिशन स्कूल का साहित्य लगातार मिल रहा है? (एक पर टिक करें):

☐ नहीं

☐ हां, डाक से

☐ हां, श्री _____ के पास से।

आप किस भाषा में पुस्तकें पाना चाहेंगे? (केवल एक ही टिक करें):

☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ तेलुगू ☐ अंग्रेज़ी

आप इस सामग्री का इस्तेमाल कैसे करते हैं/करेंगे? _____

_____

यदि आप ऐसे व्यक्तियों को जानते हों जो इस सामग्री को लगातार प्राप्त करना चाहते हैं, तो कृपया इस फार्म की कापी करवाकर उनके नाम से यह फार्म इस पते पर भेज दें Truth for Today, P.O. Box 44, Chandigarh - 160017 ।